साधन चाहिएं। यह काम किसका है? राजा का। राजा जब तक स्वयं को प्रजा का सेवक मानता है तब तक राजधर्म का पालन होता है। जब वह प्रजा को अपना गुलाम मानने लगता है, उस समय राजधर्म का क्षरण होता है। हमारे यहां कई प्रकार के राजा-महाराजा को हमने देखा है। व्यक्ति राजा बनता था और परंपरा से राज परिवार चलता रहता था। फिर वह उसके योग्य है या नहीं, इसकी चिन्ता नहीं की जाती थी।

काफी समय तक देश में ऐसा चला कि राजा का बेटा राजा बनेगा। इसलिए राज व्यवस्था के प्रति अश्रद्धा निर्माण हुई, एक आक्रोश का निर्माण हुआ। लेकिन क्या कोई संस्कारविहीन राजा प्रजा की सब प्रकार से चिंता करने वाला राजा हो सकता है? इसी कारण से ऐसी परंपरा देश भर से समाप्त हुई। दुनिया से भी समाप्त होती जा रही है। राजा कहीं पर नहीं रहे। अब राजतंत्र नहीं है। अब राज्य शासन की किसी पद्धति को अपनाया गया है। विचारों के आधार पर कोई राज्य संभालने वाला बने, यह परंपरा बनी है।

कहीं पूंजीवादी राज्य व्यवस्था बनी, कहीं पर कार्ल मार्क्स के बाद एक साम्यवादी राज्य की रचना दुनिया के सामने आई। इस व्यवस्था का आधार ही संघर्ष है। परंतु समाज का असंतोष संग्रहित करने का काम जिस व्यक्ति ने किया वह व्यक्ति उसके पतन के बाद खुद भी डिक्टेटर बन गया। यह दुर्भाग्यपूर्ण रचना है। समाज की वेदनाओं को स्वर देने, उसके अस्तित्व की रक्षा के लिए असंतोष का जो भाव निर्माण हुआ, उसे अगर नियंत्रित करना है, और कारोबार ठीक से चलाना है तो मुझे भी इस सारे असंतोष को दबाना पड़ेगा, डिक्टेटर का यही भाव बनता है। 1917 में रूस में क्या हुआ? लेनिन ने क्रान्ति का सूत्रपात किया। लेकिन लेनिन को वही करना पड़ा जो पहले राजा किया करते थे। विचारों का साम्राज्य बन गया। नहीं चला, तो स्टालिन सामने आया। लेनिन समाप्त हुआ। फिर स्टालिन भी समाप्त हुआ। ऐसे भिन्न-भिन्न प्रयोग संसार के मंच पर हुए। उस प्रक्रिया में से लोकतंत्र का जन्म हुआ, और व्यक्ति-समूह को राज करने का अधिकार प्राप्त हुआ। यह एक अच्छी रचना हुई जो कम से कम निर्दोष रही। दोष हो सकता है, पर कम से कम।

लोकतंत्र की व्यवस्था में क्या दोष हैं, इसका अनुभव हम आज कर रहे हैं। अगर मतों के आधार पर लोग चुने जाएंगे तो 50-60 प्रतिशत ही मतदान